International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर का प्रारम्भिक दौर तथा उनकी गाई अविस्मर्णीय रचना का विश्लेषण

Dr. Gaurav Jain

Associate Prof. Music Vocal, Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur

सार

हिंदी फ़िल्म संगीत के लगभग 93 वर्ष के इतिहास में अनेक महान हस्तियों के योगदान पर बात की जा सकती है ,लेकिन यदि कोई एक नाम लिया जाए, जिसने भारतीय जनमानस के हृद्यपटल पर सदा के लिए अपनी अमिट छाप छोड़ी है ,तो वो नाम यक़ीनन भारत रत्न 'स्वर सम्राज्ञी' लता मंगेशकर ही होगा। अनेक महान कलाकारों की भांति लता जी को अपने प्राम्भिक दौर में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा,बहुत कुछ सुनना पड़ा लेकिन जुझारू और दृढ़निश्चयी लता जी ने अपनी अकाट्य प्रतिभा और इच्छाशक्ति के बूते हिंदी फ़िल्म संगीत में न केवल अपनी विशिष्ट पहचान बनाई अपितु
इस पर लगभग आधी सदी तक एक छत्र राज किया।

मुख्य शब्द - संगीतकार ,आवाज़ ,स्टूडियो ,ग्रामोफ़ोन ,ऑर्केस्ट्रेशन

भूमिका

यूं तो लता जी का पूरा सांगीतिक जीवन ही प्रेरणास्त्रोत और सभी के लिए एक मिसाल है ,लेकिन इस चकाचौंध से भरे भारतीय फ़िल्म जगत में अनेक दिग्गज कलाकारों के बीच अपनी जगह बनाना और धीरे धीरे उस दौर के हर एक संगीतकार और निर्माता निर्देशक की पहली पसंद बन जाने की कहानी अपने आप में काफ़ी दिलचस्प है। शुरुवाती संघर्ष के बाद संगीतकार खेमचंद प्रकाश के निर्देशन में 'महल' फ़िल्म के एक अविस्मर्णीय गीत ने लता जी को वह मुक़ाम दिलाने में सहायता की जिसकी वो अधिकारी थीं।

उद्देश्य

1. लता जी द्वारा मराठी फ़िल्मों से प्रारम्भ करके हिंदी फ़िल्मों में पार्श्वगायन की मुख्य धारा में शामिल होने तक की महत्वपूर्ण यात्रा पर प्रकाश डालना।
2. लता जी द्वारा गाई गयी अनेक प्रारम्भिक रचनाओं के बाद फ़िल्म 'महल' की एक अद्वितीय रचना (जिसने न केवल लता जी के संगीत सफ़र को नई उड़ान दी बल्कि, सम्पूर्ण हिंदी फ़िल्म संगीत को भी एक नई दिशा दी)

का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि / पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में वर्णनात्मक शोध प्रविधि तथा विषय संबंधित साहित्य का अध्ययन एवं समीक्षा का प्रयोग किया गया है। लता को सदाशिवराव नेवरेकर ने एक मराठी फ़िल्म में गाने का अवसर 1942 में दिया ,जब वे केवल 13 वर्ष की थीं। लता ने गाना रिकॉर्ड भी किया, लेकिन फ़िल्म के फाइनल कट से वो गाना हटा दिया गया। 1942 में रिलीज़ हुई 'मंगला गौर' में लता की आवाज़ सुनने को मिली।[www.webdunia.com]

इस गाने की धुन दादा चांदेकर ने बनाई थी। 1943 में प्रदर्शित मराठी फ़िल्म 'गजाभाऊ' में लता ने हिंदी गाना 'माता एक सपूत की दुनिया बदल दे तू' गाया। वसंत देसाई और मास्टर ग़ुलाम हैदर जैसे संगीतकारों के सम्पर्क में लता आईं और उनका करियर निखरने लगा। ग़ुलाम हैदर लता के मेंटर बन गए। वे लता को दिग्गज फ़िल्म निर्माता एस मुखर्जी के पास ले गए जो उस समय 'शहीद' (1948) नामक फ़िल्म बना रहे थे। हैदर ने लता को लेने की सिफ़ारिश मुखर्जी से की। लता को सुनने के बाद मुखर्जी ने यह कहते हुए लता को लेने से इंकार कर दिया कि लता की आवाज़ बहुत पतली है। पर हैदर जी को पूर्ण विश्वास था कि लता जी की आवाज़ कुछ करिश्मा ज़रूर करेगी। ग़ुलाम हैदर ने लता जी से 'मजबूर' (1948) में एक गीत 'दिल मेरा तोड़ा, मुझे कहीं का ना छोड़ा' गवाया। यह गीत लता का पहला हिट माना जा सकता है। जब उन्होंने एक नवागंतुक की संभावित संगीत प्रतिभा के रूप में प्रशंसा करना शुरू किया, तो कई लोगों की भौंहें चढ़ गईं। उनमें से अधिकांश 'जानकार' लोगों ने उनकी भविष्यवाणी को हंसी में उड़ा दिया।उनके पास हंसने की वाजिब वजह थी । इतनी पतली आवाज़ वाली एक छोटी, किशोरी, दो चोटी वाली महाराष्ट्रीयन लड़की हिंदी फ़िल्म संगीत में कैसे टिक सकती है? वह युग शमशाद बेगम, ज़ोहराबाई अम्बालेवाली, अमीरबाई कर्नाटकी और नूरजहाँ जैसी सशक्त, देहाती पंजाबी आवाज़ों का था। फिर भी हैदर की बातों का असर जल्द ही होने लगा। श्यामसुंदर, हुस्नलाल-भगतराम, अनिल विश्वास और नौशाद जैसे कई प्रसिद्ध संगीतकारों ने उस लड़की की आवाज़ में कुछ नया, कुछ अलग खोजना शुरू कर दिया। जल्द ही बाज़ार, बड़ी बहन, अनोखा प्यार और चाँदनी रात जैसी फ़िल्मों के उनके गाने ज्यूकबॉक्स पर धूम मचाने लगे ,लेकिन उनमें से अधिकांश गीतों में नूरजहाँ की झलक अचूक थी और वे अपनी विशिष्टता स्थापित करने में असफल रहे। यह स्थिति बहुत जल्द बदलनी थी। उसके लिए नियति ने खेमचंद प्रकाश नामक व्यक्ति को चुना था ।

1908 में, राजस्थान के सुजानगढ़ नामक एक छोटे से शहर में जन्मे, खेमचंद ने सबसे पहले अपने पिता, जो जयपुर के शाही दरबार में एक कलाकार थे, से शास्त्रीय और लोक संगीत और कथक नृत्य सीखा। बीकानेर और नेपाल के शाही दरबारों में एक संगीतकार के रूप में अपने करियर की शुरुआत करते हुए, खेमचंद कोलकाता के ऑल इंडिया रेडियो में चले गए। वहां से उन्होंने न्यू थिएटर के संगीत निर्देशक तिमिर बरन के सहायक के रूप में हिंदी फ़िल्म

उद्योग में प्रवेश किया। एक स्वतंत्र संगीतकार के रूप में, खेमचंद,(जिन्होंने एक नाम भी रखा - खेमराज) ने रंजीत मूवीटोन की फ़िल्मों में अपनी संगीतमय छाप छोड़ी। 1943 की फ़िल्म तानसेन में उनका संगीत उत्कृष्ट कृति साबित हुई। इस सफलता ने खेमचंद को फ़िल्म संगीत जगत का दिग्गज बना दिया। यहां तक कि नौशाद और बुलो सी. रानी जैसे प्रसिद्ध संगीतकारों ने भी अपने करियर की शुरुआत में उनके सहायक के रूप में काम किया।

लता की आवाज़ की गुणवत्ता खेमचंद को तुरंत पसंद आई और उन्होंने लता को अपनी मुख्य गायिका बनाने का फैसला किया। लेकिन वह रंजीत मूवीटोन के मालिक सरदार चंदूलाल शाह को अपने फैसले के लिए राज़ी नहीं कर सके। निराश होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और प्रतिद्वंद्वी स्टूडियो बॉम्बे टॉकीज़ में प्रवेश कर लिया। वह स्टूडियो तब फ़िल्म 'महल' बनाने की प्रक्रिया में था, यह एक अलौकिक, रहस्यमय कहानी वाली फ़िल्म थी, जो उस शैली में पहली हिंदी फ़िल्म थी। फ़िल्म का निर्देशन कमाल अमरोही कर रहे थे और संगीतकार के तौर पर खेमचंद प्रकाश इसमें बिल्कुल फिट बैठे थे।

"मास्टरजी', जैसा कि उन्हें प्यार से बुलाया जाता था, ने फ़िल्म के लिए थीम गीत गाने के लिए लता को चुना। नक्शब जार्चवी ने गीत लिखे। कई रिहर्सल के बाद, अंतिम रिकॉर्डिंग सत्र शुरू हुआ । उषा मंगेशकर के अनुसार “अंतिम रिहर्सल शाम 6 बजे शुरू हुई और गाना अगली सुबह 7 बजे रिकॉर्ड किया गया" "आएगा आनेवाला' आ गया था।

इस गीत की आरम्भिक चार पंक्तियाँ 'ख़ामोश है ज़माना' कमाल अमरोही ने लिखी थी और बाक़ी का पूरा गीत नकशव की लेखनी से अस्तित्व में आया था। जद्दनबाई, नरगिस, खेमचन्द प्रकाश और 'महल' फ़िल्म से सम्बन्धित अन्य लोगों की उपस्थिति में जिस ऐतिहासिक गीत का सृजन हुआ था उसकी नींव में जद्दनबाई ने लता मंगेशकर के लिए यह सीख भी पिरो दी थी कि हर एक गाने की आत्मा तक जाने के लिए प्रत्येक शब्द पर ठहरकर उसके सही अर्थ, अन्विति, प्रभाव और वर्तनी को भी गायक को देखना और जानना चाहिए।[मिश्रा 2016] ये गीत न केवल लताजी के सिंगिंग करियर में मील का पत्थर साबित हुआ बल्कि ये कहना ग़लत नहीं होगा कि इस गीत ने सम्पूर्ण हिंदी चित्रपट संगीत को भी एक नई दिशा दी। श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए, क्या शानदार धुन है, कितना शानदार ऑर्केस्ट्रेशन है ! लेकिन सबसे बढ़कर, क्या आवाज़ है-इतनी रहस्यमय, इतनी मर्मस्पर्शी, इतनी संगीतमय और इतनी जादुई! वह अविस्मरणीय आवाज़ बस मन में घूमती रहती है।

हैरानी की बात यह है कि बॉम्बे टॉकीज़ के प्रमुख एस मुखर्जी की पहली प्रतिक्रिया निराशाजनक थी। "क्या इतना धीमा गाना फ़िल्म में चलेगा?" खेमचंद प्रकाश से उनका पहला प्रश्न था। दरअसल, खेमचंद की ज़िद के कारण ही मुखर्जी ने उस गाने को साउंडट्रैक पर रहने दिया। मास्टरजी किसी तरह अपनी रचना के मूल्य के प्रति अत्यधिक

आश्वस्त थे।इस गीत ने रेडियो सीलोन पर इतिहास रचा, जो उस समय भारतीय उपमहाद्वीप का प्रमुख रेडियो-स्टेशन था।

प्रचलित प्रथा के अनुसार, 'आएगा आनेवाला' के ग्रामोफोन रिकॉर्ड के लेबल पर पार्श्व गायक के नाम का उल्लेख नहीं था; इसके बजाय इसने गायिका का नाम 'कामिनी' रखा, जो महल में मधुबाला का स्क्रीन नाम था। हज़ारों श्रोताओं के पत्रों से अभिभूत होने के बाद, रेडियो-स्टेशन निदेशक को गायक का असली नाम पता लगाना पड़ा। आख़िरकार घोषणा हुई - "गायिका-लता मंगेशकर"। तब से, वह नाम भारतीय संगीत, भारतीय फ़िल्मों और भारतीय मानसिकता का एक अभिन्न अंग बन गया।

समें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि व्यावहारिक रूप से स्वर्ण युग के हर प्रमुख संगीतकार नौशाद, एस.डी बर्मन, मदन मोहन, जयकिशन, खय्याम या सलिल चौधरी, प्रत्येक ने बाद में इस विशेष गीत में लता की आवाज़ के प्रति अपने आकर्षण का उल्लेख किया। यह वह गीत था जिसने वास्तव में संगीतकारों को लता जी की आवाज़ की जबरदस्त रेंज और क्षमता से अवगत कराया था, आखिरकार उन्हें एक ऐसी आवाज़ मिल गई जिसके लिए वे किसी भी धुन की कल्पना कर सकते थे और फिर निश्चिंत हो गया कि उनकी धुन को पूर्ण न्याय मिलेगा। इस एक गीत ने वास्तव में लता को एक संगीतमय घटना में बदल दिया लेकिन भाग्य की विडंबना देखिए मैलोडी क्वीन को उस गीत के लिए कभी भुगतान नहीं किया गया जिसने उनके लिए प्रसिद्धि और भाग्य के द्वार खोल दिए।

लता ने सार्वजनिक रूप से यह कहा कि पहले मास्टर गुलाम हैदर और फिर खेमचंद प्रकाश ने ही उन्हें अलग पहचान दिलवाई। लता का तात्पर्य है कि खेमचंद प्रकाश के 'महल' में ही वह फ़िल्म संगीत की बड़ी गायिका के रूप में स्थापित हुईं। वह अपनी इस प्रारम्भिक सफलता का श्रेय आएगा आनेवाला को देती हैं। निश्चित रूप से यह 'महल' में आएगा-आएगा का अभिनय करने वाली वीनस मधुबाला ही थीं, जिन्होंने मखमली आवाज़ के साथ लेडी इन वाइट के रूप में लता पर मुहर लगाई।[Bhartan 1995]

खेमचंद प्रकाश ने कई अन्य यादगार गीतों की रचना भी की, जिनमें दूर जाए रे' और 'चेत चेत कर चले रे चतुर नर (आशा) जैसे लता रत्न शामिल थे; 'दिल ने फिर याद किया' और 'मुश्किल है बहुत मुश्किल' (महाली: 'चंदा रे जा रे ला रे और जादू कर गए किसी के नैना' (ज़िद्दी और किशोर कुमार का ऐतिहासिक पहला गाना 'मरने की दुवाएं क्यों मांगू (ज़िद्दी), खेमचंद प्रकाश हमेशा अमर रहेंगे और मुख्य रूप से "आएगा आनेवाला" के रचयिता के रूप में याद किए जाएंगे। दुख की बात है कि वह अपनी दिव्य रचना के जबरदस्त प्रभाव को देखने के लिए लंबे समय तक जीवित नहीं रहे। 10 अगस्त, 1950 को, महल की रिहाई के कुछ महीने बाद, खेमचंद का निधन हो गया। .

"आएगा आनेवाला' कई रहस्यमयी गीतों का अग्रदूत बन गया, और अपने आप में एक शैली बनाई। 'आजा रे परदेसी' (मधुमती), 'कहें दीप जले कहीं दिल' (बीस साल बाद), थुम झूम ढलती रात (कोहरा), 'नैना बरसे रिमझिम रिमझिम (वो कौन थी), 'ऐ मेरे दिल-ए-नादां' (टॉवर हाउस), 'साथी रे तुझ बिन जिया उदास रे (पूनम की रात), ये रात भी जा रही है' (सौ साल बाद)), गुमनाम है कोई' (गुमनाम) - इसके मद्देनज़र कई अलग-अलग संगीतकारों के कई गाने इसी रास्ते पर चले। वास्तव में, लता की अतियथार्थवादी, अलौकिक आवाज़ ऐसे गीतों के लिए अभिव्यक्ति का मानक साधन बन गई। [Bichu 2010]

वास्तव में एक पथ-प्रदर्शक कलात्मक रचना एक सहस्राब्दी में केवल एक बार अस्तित्व में आती है - जैसे शेक्सपियर की 'हैमलेट', जैसे लियोनार्डो की 'मोना लिसा', जैसे लता की 'आएगा आनेवाला' और फिर, विस्मय-विमुग्ध दुनिया जो कुछ भी कर सकती है वह केवल आश्चर्य है इतिहास की बदली हुई धारा में ।

निष्कर्ष

जिन लता मंगेशकर की गायकी को सम्पूर्ण भारत वर्ष और विदेश में भी सराहा गया,जिनकी आवाज़ आज तक लाखों लोगों की भाव अभिव्यक्ति का माध्यम बनी हुई है ,उनके सांगीतिक जीवन की मज़बूत नींव इसी दौर में पड़ी जहां उनकी आवाज़ और गायकी को तराशने का काम अनेक महान संगीतकारों ने किया जिनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

सन्दर्भ

1. www.webdunia.com
2. मिश्रा यतीन्द्र, लता सुर गाथा Vani Prakashan New Delhi 2016 P.no. 27 -28
3. Bhartan Raju, Lata Mangeshkar A Biography, UBS Publishers New Delhi 1995, P.no. 40
4. Bichu, Dr Mandar V, Lata - Voice of the Golden Era, Popular Prakashan Mumbai 2010, P.no. 25
5. www.wikipedia.org
6. www.britannica.com
7. www.hindi.filmibeat.com